आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : चौथा | अगस्त-2015

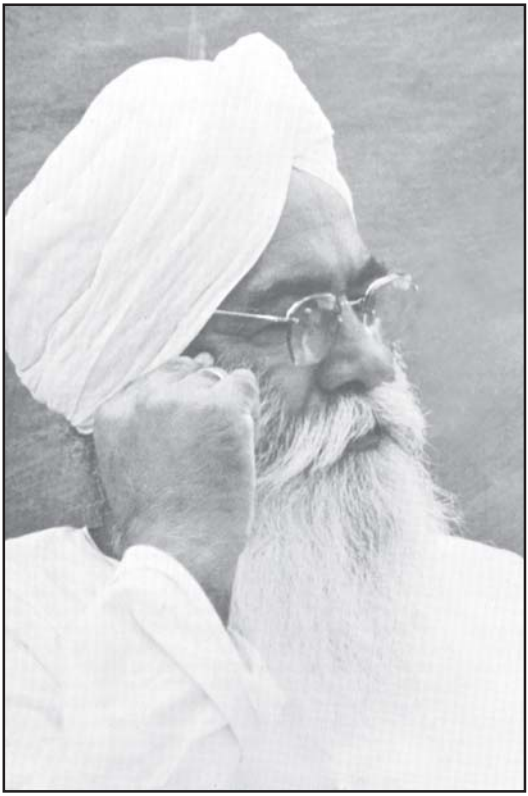

4
मिलो कृपाल प्यारेया
(एक शब्द)

5
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
बिछोड़े का दर्द
(मीराबाई की बानी)
16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

23
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब

31
परम सन्त अजायब सिंह जी
महाराज के मुखारविन्द से
अनमोल वचन

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन- 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99(दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-099 28 92 53 04, 096 67 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी सहयोग : परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2015 -161- मूल्य - पाँच रुपये

मिलो कृपाल प्यारेया

मिलो कृपाल प्यारेया, तैनूं दिल दा हाल सुणावां, (2)

1. दुःखां विच पै गई जिंदड़ी, तैथों बिना शांत ना होवे,
बिरहों दे तीर वजदे, तेरी याद आई तां दिल रोवे, (2)
तैथों बिना मेरा कोई ना, जीहनूं दिल दा भेद बतावां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

2. याद तेरी आवे सोहणया, जदों शरण तेरी विच बैहंदे,
तन–मन होवे उजला, जदों बोल मिठड़े सुण लैंदे, (2)
दस्सां कीहनूं दिल फोल के, तेरे अग्गे वास्ते पांवां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

3. दया कुल मालिक दी, बण रूहां दा व्यापारी आया,
मौज होई सावन दी, सच्चे नाम दा भंडारी लाया, (2)
हरदम चाह दिल नूं, तेरे चरणां दी धूड़ी विच न्हावां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

4. बेड़ा भवसागर चों, सतगुरु जी बन्ने लावो,
अर्जां 'अजायब' करदा, जीवां नूं पार लंघावो, (2)
होर कुछ मंगदा नहीं, नूरी दर्शन तेरा चाहवां,
मिलो कृपाल प्यारेया .....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

बिछोड़े का दर्द

मीराबाई की बानी

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

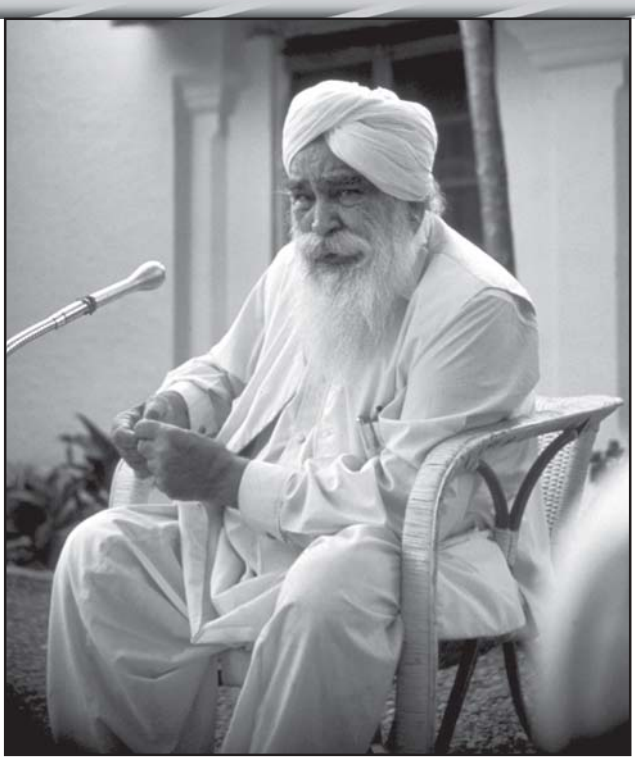

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया। हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है, परमात्मा की बच्ची है। यह अपने सुख-शान्ति के घर को भुलाकर पता नहीं कितनी बार किन-किन योनियों में गई। जब जानवर बनते हैं तब भी कोई न कोई घर बना लेते हैं। इंसान बनकर जरा अच्छे घर बना लेते हैं। इंसानी जामें में माता-पिता, भाई-बहन बनाकर इनके बंधनों में फँस जाते हैं और अपने सच्चे पिता परमात्मा को भूल जाते हैं।

सन्त-महात्मा संसार में न कोई नई कौम बनाने के लिए आते हैं और न ही पहले किसी की बनी हुई कौम को तोड़ने के लिए आते हैं। जहाँ से यह आत्मा आई है सन्त-महात्मा इसे वापिस उसी रास्ते पर डाल देते हैं। हमें न कान फड़वाने की जरूरत है न घर-बार छोड़ने की जरूरत है और न बेटे-बेटियां छोड़ने की जरूरत है। न हिन्दुओं से मुसलमान और न ईसाईयों से सिक्ख बनने की जरूरत है सिर्फ उस घर की तरफ जाने की जरूरत है जहाँ हमारा परमात्मा रहता है।

कबीर साहब और गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा है कि हमारी आत्मा उस परमात्मा की अंश है। हम सारे ही सोचेंगे कि जब हमारी आत्मा उस परमात्मा की अंश है तो यह कौन सी मुश्किल बात है कि हम अपने घर परमात्मा के पास क्यों नहीं चले जाते? यह हमारे बस में नहीं। हमें नहीं पता कि हमारा घर कितनी दूर है, इसका रास्ता कितना लम्बा-चौड़ा और गहरा है। परमात्मा ने आत्मा को बिछोड़कर अपने रास्ते में बड़े जबरदस्त पहरे लगाए हुए हैं। कहीं रास्ते में आशा-तृष्णा के पहरे खड़े किए हुए हैं, कहीं काम के अनेक प्रकार के पहरे खड़े किए हुए हैं। रेगिस्तान की तरह पैर आगे की तरफ रखते हैं तो पैर पीछे की तरफ जाता है।

प्यारेयो! परमात्मा की तरफ से जो महान सन्त इस संसार में आते हैं वे ही हमें इस रास्ते पर डाल सकते हैं। वे हमें प्यार से बताते हैं कि समाज बदलने से आप उस रास्ते पर नहीं जा सकते। वह रास्ता किसी का बनाया हुआ नहीं और न हम उस रास्ते को घटा या बढ़ा सकते हैं और न हम उसे तब्दील ही कर सकते हैं। वह रास्ता परमात्मा ने खुद ही बनाया हुआ है। गुरु साहब कहते हैं:

घर में घर दिखाए दे सो सतगुरु पुरख सुजान।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि जो लोग किताबें पढ़कर महात्माओं की बानियों पर ऐतबार करते हैं कि हमने यह बानी पढ़ ली है, वह बानी पढ़ ली है; वे लोग अपने साथ और दूसरों के साथ भी धोखा करते हैं। सन्तमत यही कहता है कि जुड़ा हुआ ही जोड़ सकता है और पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है।

प्यारेयो! यह तो जिंदगी का तजुर्बा है कि हठीले मन के साथ बिना किसी हथियार के लड़ाई मोल लेना है। जिन महात्माओं ने अपनी जिंदगी में तजुर्बा किया होता है वे हमें बताते हैं कि आपको रास्ते में क्या-क्या रूकावटें आएंगी, उन्हें किस तरह दूर करना है?

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि जब सतसंगी नाम लेकर सिमरन करेंगे फिर चाहे आप चल रहे हैं चाहे बैठे हैं या किसी से बातें कर रहे हैं या सोए हुए हैं आपका ध्यान हमेशा दोनों आँखो के दरम्यान टिका होना चाहिए। जब आपका ध्यान दोनों आँखो के दरम्यान टिका होगा तो आपको वहाँ प्रकाश नजर आएगा। जब और एकाग्र होते हैं तो सँहस दल कवल का हजारों बत्तियों की तरह झिलमिल करता हुआ प्रकाश मन को लुभाने वाला होता है। जैसे चमकती हुई बिजली मन को मोह लेती है, कभी बादलों में चली जाती है कभी बाहर आती है। जब हम वहाँ ऐसा दृश्य देखते हैं फिर इससे भी ज्यादा एकाग्र होते हैं तो हमें आत्मा के मालिक गुरु की तस्वीर ब्रह्म त्रिकुटी में टिकी हुई नजर आती है।

अगर वह स्वरूप पहले से ही हमारे अंदर प्रकट है तो हम जो चाहे सवाल कर सकते हैं अंदर जाकर कोई शक नहीं रहता। जिस महात्मा ने जिंदगी में सब कुछ देखा होता है वही हमें इस रास्ते पर डाल सकता है। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि यह बातों का या पढ़-पढ़ाई का मजबून नहीं।

महाराज सावन सिंह जी रावण की मिसाल दिया करते थे कि रावण बहुत पढ़ा-लिखा था। रावणी टीका अब तक मशहूर है लेकिन उसे मन ने धोखा दे दिया, उसने अपना सर्वनाश करवा लिया। महात्मा हमें प्यार से बताते हैं अगर पढ़-पढ़ाई से या सिर्फ विश्वास करने से हमारा मसला हल होता तो ऋषियों-मुनियों ने क्या कसूर किया था? उन्होने तो बहुत हठ योग किए आखिर जब मन का मौका लगा मन ने उन्हें हड्डियों का ढ़ेर बना दिया, उनका मजाक उड़ाया। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा ऐह मन मश्करा, कहूँ तो माने रोश।

सन्त-महात्मा बिछुड़ी हुई आत्माओं को परमात्मा के साथ मिलाने का ही काम करते हैं। जब मालिक के प्यारे संसार में आते हैं तो उनका सिर्फ रूहानियत का ही प्रचार होता है वे कोई समाज बनाने या तोड़ने का प्रचार नहीं करते। वे जब तक संसार में रहते हैं तब तक उनका प्रचार उनकी लेखनियों के मुताबिक चलता रहता है। जब वे मालिक के प्यारे दो चार या दस पीढ़ियां इस संसार में रहकर चले जाते हैं तो हम मन-बुद्धि के फैलाव में आ जाते हैं। उन्होंने जो बानियाँ सारे समाज के लिए लिखी होती हैं हम उन्हें मजहब या कौम की शक्ल दे देते हैं, एक-दूसरे के साथ लड़ना-झगड़ना शुरू कर देते हैं।

महात्मा अपनी सारी जिंदगी हमारी इस गलतफहमी को दूर करने में लगा देते हैं कि परमात्मा ने किसी को हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या इसाई नहीं बनाया। आगे जाकर भी किसी ने यह सवाल नहीं करना कि तू हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या इसाई है? कुरान शरीफ में मौहम्मद साहब ने यही दर्ज किया है कि *रबूल आलमीन,* मौहम्मद साहब ने यह नहीं कहा कि *रबूल मुसलमीन।*

आप कहते हैं कि परमात्मा सिर्फ मुसलमानों का नहीं, परमात्मा तो सारी कायनात का है। परमात्मा सारी कायनात को सतह दे रहा है। सन्त-महात्मा हम सबको इकट्ठे बिठाकर जाते हैं लेकिन हम छोटे-छोटे दायरे बना लेते हैं और उन्हें छोटे-छोटे समाजों की शक्ल दे देते हैं। ऐसा हम अपने पेट या मान-बड़ाई की खातिर करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पंडित भेख पेट के मारे, वे सन्तन पर करते तान।
हितकर सन्त उन्हें समझावें, वे माने नहीं माने आन।
उनको चाह मान और धन की परमार्थ से खाली जान।।

हम मान-बड़ाई की खातिर असली रास्ते से भटक जाते हैं और छोटे-छोटे दायरे, कर्मकांड बनाकर उनमें उलझ जाते हैं फिर सन्त-महात्मा किसी और जगह आ जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त किसी परिवार, समाज या घर के साथ नहीं बंधे होते। वे तो कुल आलम को नाम के साथ जोड़ने के लिए आते हैं।'' आप प्यार से कहते हैं कि जब ऐसी आत्माएं किसी और जगह आ जाती हैं तो उनके अंदर अपनी आत्माओं के लिए बहुत दर्द छिपा होता है। वे नए सिरे से अपनी खोज शुरू करती हैं, उनके अंदर बहुत तड़प होती है। मैं बताया करता हूँ कि इसमें औरत-मर्द का सवाल नहीं कि औरतें ही मालिक की भक्ति कर सकती हैं या मर्द ही मालिक की भक्ति कर सकते हैं।

प्यारेयो! परमात्मा रहम का समुद्र है उसका दरवाजा हर एक के लिए खुला है अगर उसका दरवाजा एक कौम या मजहब के लिए खुला हो तो हम उसे बेअंत या रहम करने वाला परमात्मा नहीं कहते; कोई भी परमात्मा की भक्ति करे।

मैं बताया करता हूँ कि लिंग भेद दसवें द्वार तक ही है। हमारी आत्मा के अंदर पहले स्थूल उसके अंदर सूक्ष्म और उसके अंदर कारण पर्दे हैं। जब आत्मा तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचती है वहाँ इसका प्रकाश बारह सूरज जितना है। वहाँ पहुँचकर आत्मा को होश आती है कि मैं तो ऐसे ही कौमों मजहबों में फँसी रही, मेरा घर कोई और है। वहाँ जाकर आत्मा को पता लगता है कि मेरा भी कोई परमात्मा है, मेरा भी कोई घर है।

आत्मा वही है जो परमात्मा है। फर्क इतना है कि परमात्मा समुद्र है और आत्मा उसकी एक बूंद है। पानी समुद्र में से भाप बनकर उड़ता है बादलों में चला जाता है बादलों से फिर बरसात बनकर नीचे जमीन पर आ जाता है। जमीन पर कहीं गंद है कहीं फूस पड़ा है पानी उनका साथ लेकर उस गंद को अपना हिस्सा समझने लगता है, उसमें से बदबू आनी शुरू हो जाती है। जब उस पानी को तपिश मिलती है वह भाप बनकर उड़ता है फिर बादलों में जाकर समा जाता है। उस पानी को होश आती है कि मेरा असला तो बादल हैं मैं तो ऐसे ही अपने आपको गंद समझ बैठा था।

हमारी आत्मा उस समुद्र का एक कतरा है। यह मन के देश में आई इसने मन का साथ लिया, मन इस पर खुद सब्र नहीं करता इन्द्रियों का साथ ले लेता है। इन्द्रियों ने ख्वाहिशों का साथ ले लिया, मन में जो ख्वाहिश उठती है उसे पूरा करने के लिए हम उसी इन्द्री का सहारा लेते हैं। यह सब कुछ हमसे हमारा मन करवाता है। जब सन्त-महात्मा इसे शब्द-नाम के साथ जोड़ते हैं इसे शब्द-नाम की तपिश मिलती है जिससे यह आत्मा परमात्मा में जाकर मिलती है तब इसे पता लगता है कि मेरा असला तो परमात्मा है। मैं परमात्मा में से गई थी और परमात्मा में आ गई

हूँ। जिस तरह पानी को पता लगता है कि मैं बादलों में से गया था और बादलों में ही आ गया हूँ।

मैंने बताया था कि चाहे औरत-मर्द, बच्चा-बूढ़ा कोई भी भक्ति करे परमात्मा उसे अपने गले लगाता है। इसमें गरीब-अमीर का सवाल नहीं। जो परमात्मा को याद करता है उसकी भक्ति करता है परमात्मा उसी का हैं। गुरु साहब कहते हैंः

हर को भजे सो हर का होय।

हर समाज में मीरा बाई के बहुत से पद्य गाए जाते हैं। हमें ऐसे भक्तों के जीवन का सही पता नहीं होता कि ये कब पैदा हुए और इन्होंने कब शरीर छोड़ा। ग्रंथों में सिर्फ अंदाजे ही हैं।

आमतौर पर वक्त के पंडित, कवि और भाट लोग उस समय के राजाओं के बहुत शोले गाते थे उनका इतिहास लिखते थे क्योंकि उनका राजदरबार में मान होता था उन्हें वहाँ से खाने-पीने के लिए मिलता था। भक्तों से क्या मिलना होता है? मीरा बाई बहुत भक्तनी हुई है बेशक मीरा बाई का संबंध राजघराने से था लेकिन वह राजघराना मीरा बाई को माथे का कलंक समझता था। जब हम इनके ग्रंथ देखते हैं तो हमें उनमें कोई ज्यादा हाल नहीं मिलता।

आज साढ़े चार सौ साल बाद भी लोगों की जुबान पर मीरा बाई की अमिट छाप है जिसे कोई मिटा नहीं सका। लोग बड़े प्यार से मीरा बाई के भजन गाते हैं। जिस तरह मीरा के अंदर **बिछोड़े का दर्द** था ऐसा ही बिछोड़े का दर्द सारे सन्तों के अंदर व्यापक हुआ है। अगर उनके दिल में ऐसा दर्द न होता तो वे किस तरह परमात्मा को प्राप्त करते। जब **बिछोड़े का दर्द**, बिछोड़े की आग दिल के अंदर भड़कती है तब परमात्मा उसे शान्त करने के लिए 'शब्द-नाम' का

अमृत भेजता है जिसे पीकर ही तृप्ति आती है। आप किसी भी सन्त के दिल का हाल देख लें! गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

अंतर प्यास उठी प्रभ केरी, सुन गुरु वचन मन तीर लगईया।

आप कहते हैं कि हमारे दिल के अंदर परमात्मा से मिलने का दर्द पैदा हुआ। हमने उसे जंगलो, पहाड़ो, मन्दिरो, गुरुद्वारो और तीर्थों में ढूंढा। जब गुरु अमरदेव जी के पास गए तो आपने कहा, ''ओ भले लोग! परमात्मा तेरे अंदर बैठा है, तू कहाँ फिरता है?'' जब उनके कहे मुताबिक अंदर तवज्जो दी तो अंदर दर्शन हुए, उनका वचन तीर की तरह लगा। गुरु साहब कहते हैं:

रामभक्त अणियाले तीर।

जिसे वह तीर लग जाता है उसे पता है कि वह तीर किस तरह का है? वह कुंडीदार तीर होता है, निकलता नहीं।

हौं आकल विकल भई गुरु देखे, हौं लोट पोट हो पईऐ।

पहले तो आत्मा कहती है कि यह मेरी तरह इंसान है, मेरी तरह ही चलता-फिरता और खाता-पीता है लेकिन इंसान इंसान में बहुत फर्क होता है। मैंने पहले भी बताया था जब सतसंगी अपने ख्याल को दोनों भरवटों के बीच टिकाकर सिमरन करता है उठते-बैठते, चलते-फिरते उसका ख्याल दोनों आँखों के बीच एकाग्र हो जाता है तब उसे प्रकाश नजर आता है और एकाग्र होता है तो उसे सहस दल कँवल का प्रकाश बिजली की तरह चमकारे मारता हुआ दिखाई देता है। जब और एकाग्र होकर इससे ऊपर जाता है तो इसे गुरु की मन मोहनी मूरत टिकी हुई नज़र आती है।

अगर इसने गुरु को प्रकट कर लिया तो यह जो सवाल करता है गुरु उसका जवाब देता है। जब गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है तो

यह उसे छोड़ नहीं सकता। तब इसे खाना-पीना और पहनना कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यह इस तरह है जैसे बच्चे लुका-छिपी का खेल खेलते हैं। वह कभी छिप जाता है कभी दर्शन देता है। ऐसा **बिछोड़े का दर्द** पैदा करने के लिए होता है ताकि इसमें कोई कच्चाई न रहे, यह पक जाए।

प्रेमी रात को पूरी नींद नहीं ले सकता, सारी रात तड़पता है खड़ा होकर रात गुजारता है। आप महात्माओं का जीवन पढ़कर देखें! जिनके साथ होती है उन्हें पता है। हज़रत बाहु कहते हैं:

पोह माघ मंगे खरबूजे, मैं कित्थो ल्यावां वाड़ी हू।
न सोवे न सोवण देवे, हो रहा बाल रिहाड़ी हू।।

जिस तरह बच्चा रात को दर्द में रोता है तो माता हर उपाय करती है बच्चा फिर भी चुप नहीं होता इसी तरह वह बच्चे की तरह न सोता है न सोने देता है उसके दिल में **बिछोड़े का दर्द** होता है।

महाराज सावन सिंह जी रातों को जागते रहे, खड़े रहे। महाराज कृपाल की दर्द भरी दास्तान हम खुद कानों से सुनते रहे हैं कि आप रावी नदी के बर्फ जैसे ठंडे पानी में खड़े होते थे कि **बिछोड़े का दर्द** दूर हो, वह प्यारा मिले। आप कहा करते थे, ''गूंगा पहलवान क्यों मशहूर हुआ? वह सारी-सारी रात मेहनत करता था।'' जिनके दिल में **बिछोड़े का दर्द** होता है वे ऐसा करते हैं।

अगर हमारा साथी साथ छोड़ जाए इस मामूली बिछोड़े पर हम कितना रोते-तड़पते हैं। खाना नहीं खाते भगवान में भी नुख्स निकालते हैं। क्या कभी परमात्मा का गुरु का बिछोड़ा याद आया? गुरु अंदर है फिर भी हम उससे मिल नहीं रहे। क्या कभी अपने आपको लानत दी, क्या कभी दिल तड़पा कि मैं तेरी याद में खड़ा हूँ

तू मुझे दर्शन दे! हमारा दिल एक दुनियावी रिश्तेदार जितना भी नहीं तड़पता फिर जब हम मिलते हैं तब कहते हैं कि अंदर दर्शन नहीं होते। पत्र में लिखते हैं कि मैं भजन नहीं करता। अब आप ही बताएं कि सोते हुए का पर्दा किस तरह खुले?

हम सब मीरा बाई की कहानी जानते हैं। सब सन्तों की कहानी एक जैसी ही होती है। उन्हें जिदंगी में क्या-क्या कठिनाईयां आती हैं। उन्होंने कोई बुरे कर्म नहीं किए होते परमात्मा ने उन्हें दुनिया में से निकालना होता है। यह दुनिया झूठी है। झूठा उसे कहा गया है जो सदा पायदार न हो। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

कूड़ राजा कूड़ प्रजा कूड़ सब संसार।
कूड़े कूड़ा न्यौं लग्गा विसर गया करतार।।

राजा प्रजा किसी ने भी यहाँ नहीं रहना, यह संसार कूड़ है। मियाँ-बीवी का प्यार भी कूड़ है। एक दिन मियाँ चला जाएगा या बीवी चली जाएगी। नाशवान चीज़ का नाशवान के साथ प्यार लगा हुआ है और हम परमात्मा को भूल गए हैं।

तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ हौं हाजिर नाजिर कब की खड़ी।।

जब हम गुरु का दिया हुआ सिमरन करते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर आँखों के पीछे आ जाते हैं। जो वहाँ पहुँच जाते हैं वे वहाँ जाकर आवाज लगाते हैं। बुल्लेशाह कहते हैंः

घुंड चक सज्जणा हुण शरमा कासनूं रखियां।

प्यारेया! अब तूने पर्दा क्यों डाला हुआ है क्या तुझे मुझसे शर्म आती है? तू सबके अंदर घी की तरह समाया हुआ है। अब मैं तेरे पास आ गया हूँ तुझे किस बात की शर्म है अब तू पर्दा उठा ले।

इसी तरह मीरा बाई कहती हैं, ''मैं रोज सिमरन करके आँखों के पीछे एकाग्र होती हूँ, अब तू मुझे दर्शन दे। मैं दिन-रात सोते-जागते हाजिर खड़ी हूँ।'' जिनका बर्तन बन जाए उन्हें टाँगे अकड़ाने की जरूरत नहीं पड़ती। कबीर साहब कहते हैंः

भजन तेल की धार साधना अधके साधी।

जब हमारी आत्मा सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचती है तो इस तरह की अखंड वृति बन जाती है जिस तरह तेल की धार नहीं टूटती। मीरा बाई कहती हैं, ''मैं कब की खड़ी हूँ तू आँखें खोलकर तो देख।''

साहू ते दुश्मन होई लागे, सबमें लगूं कड़ी।

सज्जन, मित्र सभी किसी न किसी तरीके से दुश्मनी करते हैं। दुश्मनी ऐसी नहीं कि डंडे से पीटते हैं कभी बस आए तो ऐसा भी कर लेते हैं। यार-दोस्त कहते हैं, ''तू किस तरफ लग गया है? अभी तो खाने-पीने के दिन हैं।'' माता कहती है, '' बेटा! तुझे क्या कष्ट है? तू अभी भक्ति की तरफ क्यों लग गया है?'' पिता कहता है, ''भक्ति करना हम बूढ़ो का काम है तू किस तरफ लग गया है?''

ऐसी हम सबके साथ ही बीतती है। किसी को परमात्मा की भक्ति से हटाना इससे बड़ी और कौन सी दुश्मनी है। लड़का शराब पिए, जुआ खेले तो माता-पिता खुश होते हैं कि हमारा लड़का बहुत कुछ करने लग गया है। कोई भाग्यशाली माँ ही बच्चे को भक्ति करते हुए देखकर खुश होती है।

कबीर साहब को जिसने पाला था उससे किसी ने कहा कि तेरे घर में रोज बहुत संगत आती है, तेरे घर में आनन्द मंगल है। सभी लोग तुम्हें नमस्कार करते हैं। कबीर की माता कहती हैः

सुणों दराणी सुणों जठानी अचरज ऐह भयो।
सात सूत ऐह मुंडए खोयो ऐह मुंडयो क्यों न मुयो।
जबकी माला लई नपूते तब ते सुख न भयो।।

कबीर साहब की माता कहती है, ''बहन! जो हमारे साथ बीतती है हमें ही पता है। यह हमारे घर का सूत नहीं संभालता। लोगों को मौत आती है लेकिन यह मरता नहीं। यह जब से राम! राम! करने लगा है हमारे घर से सुख पर लगाकर उड़ गया है।''

सोचकर देखें! उसे कितना दुख था? आज हम कबीर साहब को प्यार से याद करते हैं। उनकी माता को आशीषें देते हैं कि उसने सूरमे बच्चे को जन्म दिया लेकिन उस समय माता को दर्द होता है।

मीरा बाई भी यही कहती हैं, ''जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं उस समय सज्जन भी हमसे ईर्ष्या करते हैं। मैं जिनके पास बैठती हूँ वे भी ईर्ष्या करते हैं।'' गुरु नानकदेव जी भी कहते हैंः

आवत को जाता कहे जावत को आता।
जागत को सूता कहे सूते को जागत।
राते की निन्दा करे ऐसा कल में डिट्ठा।।

जो परमात्मा की तरफ जाग जाता है संसार वाले उसे कहते हैं कि अब यह हमारी तरफ से गया। यह तो सो गया है, यह सूना हो गया है इसे क्या पता है? जो परमात्मा में समा गए हैं कलयुग में उनकी निन्दा होगी। जो दुनिया की तरफ जागता है उसे लोग कहते हैं कि यह जागता है।

मीरा बाई कहती हैं, ''हे परमात्मा! इस समय सज्जन भी मेरा विरोध कर रहे हैं। मैं तेरे दरवाजे पर खड़ी हूँ मुझे सिर्फ तेरा ही आसरा है तू पर्दा खोल।''

तुम बिन साऊ कोऊ नहीं है डिगी नाव मेरी समुंद्र अड़ी।

मीरा बाई कहती हैं, ''मेरी नाव समुद्र की घुम्मण-घेरियों में फँसी हुई है। तू ही मेरी बेड़ी का मल्लाह है और तू ही इस बेड़ी को पार लेकर जा सकता है।''

दिन नेह चैन रात नेह निन्द्रा सूखूं खड़ी खड़ी।

मीरा बाई कहती हैं, '' मुझे दिन को चैन नहीं, रात को नींद नहीं आती। नींद अगर कोई तेरा ग्राहक हो तो मैं तुझे क्विंटलों के भाव बेच दूं! तू उस घर जा जहाँ कोई परमात्मा का भक्त नहीं। तू भक्तों के द्वारे पर क्यों आती है?'' **बिछोड़े के दर्द** में सताए हुए को चैन कहाँ? जब प्रेमी की ऐसी हालत हो जाती है तो वह चारपाई पर सो नहीं सकता अगर बैठता है तो उससे बैठा भी नहीं जाता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

घट दुख निंदड़ीए पिर प्रेम लगा।
वध सुख रेनड़िए पिर स्यों सदा पगा।।

आप रात से कहते हैं, ''तू बढ़ जा। हमारा परमात्मा के साथ प्यार लगा हुआ है दिन चढ़ेगा तो हमें **बिछोड़े का दर्द** होगा, दुनिया आएगी उससे मिलना पड़ेगा। नींद से कहते हैं कि तू दुखों को आवाज लगाती है, तू घट जा।''

मैं जब 77 आर. बी. में था, उस समय पश्चिम से दो मियां-बीवी आए। पति ने सोचा! काफी पैसा खर्च करके आए हैं क्यों न

भजन किया जाए। उसने प्रेम वश पत्नी को उठाया लेकिन पत्नी नाराज हो गई कि तूने मुझे क्यों उठाया? मैंने उससे कहा कि इसने तो तुझे भजन के लिए ही उठाया है। आप सोचकर देखें! अगर अंदर आग भड़की हो तो क्या हम सोने वाले को आशीष देंगे? कबीर साहब कहते हैः

सुत्ता साध जगाईऐ करे नाम का जाप।
तीनों तो सुत्ते भले साकत सिंग और साँप।।

सोते हुए साधु को जगाएंगे तो वह नाम का जाप करेगा और उठाने वाले का धन्यवाद करेगा। साँप को उठाएंगे तो वह किसी को डंक मारेगा। शेर को उठाएंगे तो बंदे का घात करेगा। साकत को उठाएंगे तो वह गुस्सा करेगा। जब हम अभ्यास नहीं करते तो उठाने वाले को बुरी तरह देखते हैं।

शुरू में मेरे पास 'दो-शब्द' का भेद था। उस समय हम कई गांवों में और अपने आश्रम में अभ्यास का कार्यक्रम बना लेते थे। कई लोग सर्दी में बहुत भारी कपड़ा लेकर बैठ जाते। जब आप अच्छे-अच्छे कपड़े लेकर अभ्यास में बैठेगें तो नींद अपने आप ही आ जाएगी। मैं एक प्रेमी को हमेशा कहता कि वह अभ्यास में बहुत जोर-जोर से खर्राटे मारता है। वह जब सोता तो मैं उसे पकड़ लेता था। जब उससे कहते तो वह यही जवाब देता कि मैं सोया हुआ नहीं था। एक दिन मैंने उसके घर के ही दो प्रेमीं साथ ले लिए, जब उसे बुलाया तो वह हमारी तरफ बहुत गुस्से से देखने लगा। मैंने उससे कहा कि हमने तेरा कोई नुकसान तो नहीं किया। उस प्रेमी का गांव पंजाब से तीस मील दूरी पर था। उसने कहा, ''मैं पिछले गांव से बैलगाड़ी लेकर जा रहा था, बैलगाड़ी पेड़ में फँस गई। मैं अपने भाई को आवाज दे रहा था कि आ हम बैलगाड़ी को निकालें।''

हम सतसंग में सो जाते हैं, भजन पर बैठे हुए भी सो जाते हैं अगर कोई हमारी कमी बताता है तो हम सफाई पेश करते हैं। लेकिन भक्त नींद से कहते हैं कि तू हमारे पास आ ही नहीं।

बाण बिरह के लगे हिय में भूलूं न एक घड़ी।

मीरा बाई कहती हैं, ''मेरे दिल में तेरे विरह का बाण लग गया है मैं इसे भूल नहीं सकती।'' प्यारेयो! हम कहते हैं कि अभ्यास में बैठा नहीं जाता, नींद आती है। हमारी ऐसी हालत इसलिए है कि हमारे दिल में अभी विवेक पैदा नहीं हुआ। जब तक विवेक पैदा नहीं होता तब तक विरह का बाण नहीं लगता। हम सतसंग में ऐसे आते हैं जैसे मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में जाकर फेरी लगा आए। सतसंग सुनते हैं लेकिन उस पर अमल नहीं करते अगर अमल करें तो देखें! विरह का बाण क्यों नहीं लगता?

पत्थर की तो अहिल्या तारी बन के बीच पड़ी।
कहा बोज मीरा में कहिए सौ ऊपर एक धड़ी।।

आप पुराणों में कथा पढ़ते हैं कि गौतम ऋषि की धर्मपत्नी उसके श्राप से पत्थर बन गई थी। रामचन्द्र जी महाराज के स्पर्श से उसका उद्धार हुआ।

मीरा बाई कहती हैं, ''पत्थर तो नाम नहीं जप सकता, पत्थर साध-संगत में भी नहीं जा सकता; पत्थर को तो अपना होश भी नहीं फिर मुझे तारना तेरे लिए क्या मुश्किल है? मैं तो तेरे नाम में लगी हुई हूँ। तेरे नाम के साथ लगकर, नाम के प्रताप से सबका उद्धार हो गया है।'' चतुरदास ने कहा है:

कब्र तों वी लंघ जाए सोहणा, होया वास जे पास कदी।

जिनकी आंखे खुल जाती है। जिनके अंदर महान हस्ती का दर्द होता है जिन्हें विश्वास होता है, वे कहते हैं अगर महापुरुष कब्र के ऊपर से भी गुजर जाए तो उसका भी उद्धार हो जाता है।

गुरु रैदास मिले मोहे पूरे धुर से कलम भिड़ी।

आमतौर पर सामाजिक लोग कहते हैं कि हमें किसी गुरु या सन्त की जरूरत नहीं। ऐसा वही लोग कहते हैं जिनके दिल में परमात्मा से मिलने की विरह तड़प पैदा नहीं हुई या उनके ऊपर अभी परमात्मा ने मेहर नहीं की। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

गुरु मंत्रहीनस जो प्राणी दीर्घन्त जन्म भ्रष्टने।
कूकर सूकर काक गदर्भ खल तुल्हे।।

जिसे किसी महात्मा से 'शब्द-नाम' का भेद नहीं मिला वह कुत्ते, सूअर, साँप और गधे जैसा है। जिस तरह कुत्ते अपना जन्म बर्बाद कर जाते हैं। सूअर गंद में अपना जन्म बर्बाद कर जाते हैं। सर्प लेट-लेटकर अपना जन्म बर्बाद कर जाते हैं। गधे गंद में लेटकर अपना जन्म बर्बाद कर जाते हैं। ऐसे ही जो इंसान विषय-विकारों के गंद में लेटते हैं वे भी अपना जीवन बर्बाद कर जाते हैं।

मीराबाई कहती हैं, ''मुझे पूरे गुरु रविदास जी मिल गए जहाँ से मेरी आत्मा बिछड़ी थी वह कलम भिड़ गई है। सतगुरु हमारी आत्मा की कलम है। हमारी आत्मा परमात्मा में जाकर मिल जाती है। यह गुरु रविदास की कृपा थी जिन्होंने मेरी पुकार सुनी मेरी आत्मा को वहाँ जोड़ दिया जहाँ से यह बिछड़ गई थी। यह पागल होकर कभी ऊँची तो कभी नीची योनियों में जाती थी।''

सतगुरु सेन दई जब आके जोत में जोत रली।

मीरा बाई कहती हैं, ''सतगुरु ने मुझे इशारा करके बताया कि यह रास्ता तेरे घर को जाता है, जहाँ से तेरी आत्मा बिछड़कर आई है। मेरी आत्मा ज्योति थी परम ज्योति में जाकर मिल गई है।'' आप उसे सेन, जोत, नाम, शब्द, कलमा कुछ भी कह लें।

गुरु नानकदेव जी ने उसे रब्बी बाणी, धुर की बाणी, सच्ची बाणी, अमर हुक्म, कीर्तन, अकथ कथा कई नामों से याद किया है। कबीर साहब ने उसे शब्द नाम, अकथ कथा कहा है। स्वामी जी महाराज ने उसे शब्द नाम या मूल कलाम कहा है। मुसलमान फकीरों ने उसे बांगे असमानी, कलमा, निदाय सुल्तानी कहा है। ऋषि-मुनियों ने उसे अंदर का राग, दिव्य धुनि, आकाशवाणी कहकर हमें याद दिलाया है। यहाँ मीरा बाई उसे सेन कहती है। गुरु अर्जुनदेव जी भी कहते हैंः

ज्यों जल में जल आए खटाना त्यों ज्योति संग मिल ज्योत समाना।

जिस तरह गंदा पानी गंगा में मिलकर गंगा का रूप बन जाता है। इसी तरह किसी छुरी के ऊपर बहुत सारा जंग लगा हो अगर हम उस छुरी को पत्थर के ऊपर रगड़ें तो वह छुरी बिल्कुल साफ हो जाएगी। बेशक हमारी आत्मा संसार के विषय-विकारों में लिपटी है और पापों के नीचे दब गई है अगर हम रोज सिमरन करते हैं तो सिमरन भी उस पत्थर का काम करता है हमारी आत्मा का शीशा साफ हो जाता है। हमारी छोटी ज्योति उस परम ज्योति में जाकर मिल जाती है।

मीरा बाई कहती हैं, ''मुझे मेरे सतगुरु रविदास जी मिले उन्होंने मेरे ऊपर कृपा की मुझे अंदर का भेद दिया।'' हमें मीराबाई के इस छोटे से शब्द से प्रेरणा लेनी चाहिए दिल लगाकर भजन-सिमरन करना चाहिए। *** DVD -284

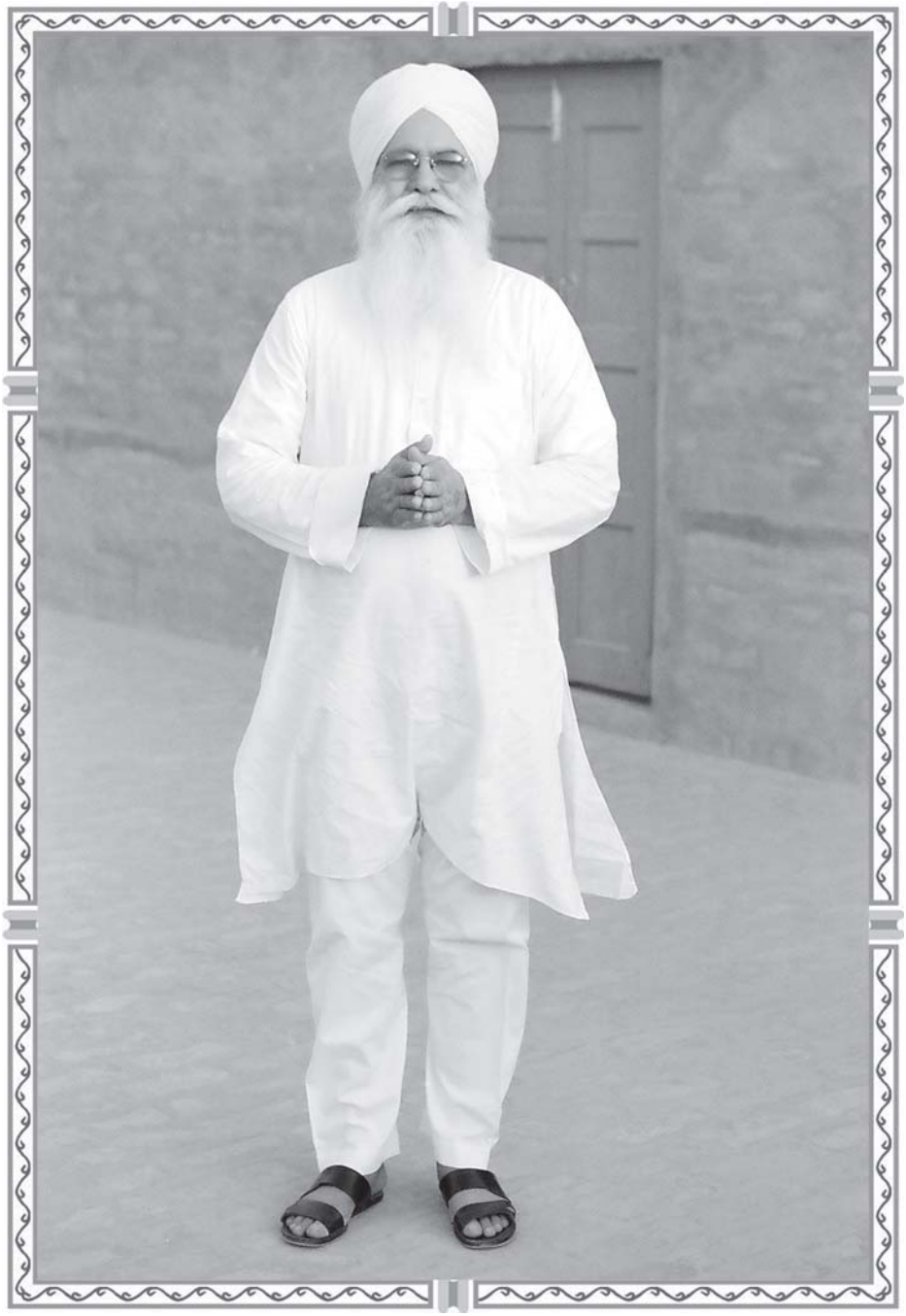

सवाल-जवाब

एक प्रेमीः- *सतगुरु के चरणों की धूलि क्या होती है?*

बाबा जीः- हाँ भाई! बड़ा अच्छा सवाल है सब गौर से सुनें। जिसने भी सन्तों की अंतरी और बाहरी धूलि को प्राप्त किया है उसने इस धूलि की महिमा गाई है। प्यारेयो! अगर हमें बाहरी धूलि न मिले, हम इसकी कद्र न करें तो हममें अंदर जाने का शौंक पैदा ही नहीं होता; गुरुमत की अलिफ-बे देह से ही शुरू होती है।

हम जानते हैं कि प्यार हमेशा अपने जैसे के साथ ही होता है। जिसको हमने कभी देखा नहीं हम उसकी कल्पना कैसे कर सकते हैं, उसका ध्यान किस तरह कर सकते हैं? परमात्मा सर्वव्यापक, अलख, अगम, अगोचर है। परमात्मा हमारी इस कमजोरी को जानता है कि ये मुझसे मिल नहीं सकते मुझे देख नहीं सकते क्योंकि चमड़े की आँखें परमात्मा को देख नहीं सकती। हमारे ये पैर रूहानी चढ़ाई नहीं चढ़ सकते, हम पिंगले भी हैं लूले भी हैं। आँखे होने के बावजूद भी हम अंधे हैं, हम उस अलख परमात्मा को लख नहीं सकते।

हमारी इस कमजोरी को देखकर ही उस रहम के समुद्र परमात्मा को तरस आया। वह खुद ही देह धारण करके संसार में आया और उसने हमें अपना भेद बताया। गुरु अर्जुनदेव जी की बानी में बहुत गुरु प्यार झलकता है। आप कहते हैंः

मैं देख देख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा।

सन्त हमें बाहर की धूलि नहीं उठाने देते। प्रेमी उस धूलि की कद्र करते हैं, उन्हें पता है कि इस धूलि में कितना राज़ छिपा हुआ

है। प्यारेयो! ऐसा सवाल पहले भी कई बार आया है। यहाँ मैं छोटी सी कविता बोला करता हूँ अगर परमपिता परमात्मा कृपाल देह धारण करके आएं तभी मैं उनके चरणों की धूलि उठा सकता हूँ।

हम जानते हैं अगर कोई एक बार इस संसार को छोड़ जाए चाहे वह वलि, पैगम्बर या परमात्मा रूप महात्मा हो चुका हो वह इस संसार में वापिस उसी रूप में नहीं आता। यह उसी परमात्मा का बनाया हुआ विधान है। मुझे कई बार परमात्मा कृपाल के साथ चलने का मौका मिला है। आप मेरे खेत में चलकर बहुत खुश होते थे। आपके साथ चलने में बहुत मजा आता था क्योंकि आपके साथ चलना परमात्मा के साथ चलने जैसा ही महसूस होता था।

आप जब कभी खुश होकर मुझे अपनी कार में सफर करवाते तो मुझे ऐसा मालूम होता था कि मैं आपके बेड़े में बैठकर उड़ रहा हूँ। आप सफर में बहुत सी बातें सुनाते लेकिन मैं जिस रस में मस्त होता था उसे मैं ही जानता था कि उन बातों में कितना मजा था।

आप दुनियावी नहीं परमार्थ की बातें करते थे। वे कुछ बीते समय की और कुछ आने वाले समय की दिल को छू लेने वाली गहरी बातें थी। एक बार मैंने परमात्मा कृपाल के चरणों की मिट्टी उठाई तो आपने कहा, ''तू यह क्या कर रहा है?'' उस समय मैंने प्यार से आपको यह कविता सुनाई:

तेरी सजरी पैर दा रेता चुक चुक लां लां हिक नूं।
प्यारेया तेरे पंज शब्दां ने मैंनू तारया।।

प्यारेयो! मैंने वह धूलि बहुत इज्जत और प्यार से संभालकर रखी हुई है। परमात्मा सावन-कृपाल ने जिस चादर को छुआ था उसे भी बहुत कीमती समझकर रखा हुआ है। मैं जब इन चीज़ों को

देखता हूँ तो मेरी याद ताजा हो जाती है। मैं जब बाहर टूर पर जाता हूँ तो आपका दिया हुआ कोट बहुत प्यार और इज्जत से पहनता हूँ, मैंने एक कोट रसल प्रकिन्स को देकर उसके साथ आपका प्यार बाँटा है।

प्यारेयो! यह तो बाहर की धूलि की महिमा है। जिन्हें बाहर की धूलि से प्यार होता है जिनके दिल में धूलि के लिए इज्जत होती है वे इसे अपनी जिंदगी का अंग बना लेते हैं। उनके दिल में तड़प उठती है कि मैं नूरी चरणों तक पहुँचू और धूलि भी प्राप्त करूं। अंदर की आँख को सुजाखा करूं। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने गुरु से दुनिया का धन-पदार्थ, पुत्र-पुत्री, जमीन-जायदाद और गद्दी नहीं मांगी। आपने यही मांगाः

नानक दास यही सुख दीजे मोको कर सन्तन की धूणे।

हमेशा सतसंग में यही बताया जाता है कि जब हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे ले आते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों पर्दे उतारकर अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं वहाँ सन्तों के नूरी चरण हैं। जब हम सूरज, चंद्रमा, सितारे पार करके नूरी चरणों तक पहुँच जाते हैं उस समय ही हम सच्चे शिष्य बनते हैं। बाहर तो प्रेक्टिस करवाई जाती है कि आप अंदर जाकर इस आवाज को सुनें।

गुरु हमें अंदर धुन के साथ जोड़ता है जो कण-कण में व्यापक है अगर हम एक बार उस धुन को सुन लें तो दुनिया के विषय-विकारों में फँसने का सवाल ही पैदा नहीं होता, हमारा डारेक्शन ही बदल जाता है। हम काल का जाल तोड़कर ही उस धुन को सुनते हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी ने इसकी महिमा की हैः

एक चित्त जो ईक छिन ध्यावे, काल फँास के बीच न आवे।

अगर कोई खुशनसीब आत्मा नौं द्वारे खाली करके एक सैकिंड भी अंतरी शब्द को सुन लेती है तो उसके सारे बंधन टूट जाते हैं। मुसलमानों की पवित्र किताब में आता है अगर कोई खुदा के बेटे की आवाज सुन ले तो कब्रों में से मुर्दे उठकर खड़े हो जाएंगे। आवाज वही है सिर्फ लफ्जों का फर्क है। इस आवाज को महात्माओं ने अलग-अलग भाषा में बयान किया है।

गुरु नानकदेव जी ने एक शब्द में लिखा है, ''कलयुग के ये लक्ष्ण हैं कि लोग मरे हुए को जीवित कहते हैं और जीवित को मरा हुआ कहते हैं। जाते हुए को आया और आए हुए को जाता हुआ कहते हैं। जो परमात्मा की तरफ लगे हुए हैं उसे संसार वाले कहते हैं कि यह हमारी तरफ से गया।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

राते की निन्दा करे ऐसा कल में डीठा।

जो परमात्मा से मिलकर एक हो गए हैं लोग उनकी निन्दा करेंगे। कलयुग में लोग ऐसे महात्मा का विरोध करेंगे। तुलसी साहब ने भी कहा हैः

छिन छिन सुरत संभार लार बिरके रहो।

पल-पल आपका ख्याल दुनिया की तरफ जाता है क्योंकि नौं द्वारे बाहर की तरफ खुलते हैं। आप इसे सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर लेकर आएं। सिमरन तन को साफ करने का और मन की जंगाल को साफ करने का झाड़ू है, सिमरन हमारी आत्मा को साफ करता है। जब हमारा भटकता हुआ मन तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाता है तो अंदर का अंधेरा खत्म हो जाता है, प्रकाश से भर जाता है। तुलसी साहब कहते हैंः

लगन लखे सत पार तो पाया हां रे सन्त चरण की धूल नूर दरसाया।

आप उसे नूर कह लें या प्रकाश कह लें लेकिन सन्तों ने इसे धूलि कहकर बयान किया है। हर सन्त ने सन्तों के चरणों की धूलि की महिमा गाई है। गुरु के चरणों तक पहुँचकर ही सच्चा सेवक बनता है, उसके आगे गुरु की ड्यूटी है कि वह इसे एक मंडल से दूसरे मंडल में लेकर जाता है।

जब प्रेमियों को नाम मिलता है तो मैं उनसे कहा करता हूँ, ''आपको समुद्र में डुबकी लगाने का मौका मिल गया है, अब आप प्यार के समुद्र में डुबकी लगाकर नाम का मोती निकालें।'' भाई सतिदास, मतिदास गुरु की धूलि में जज्ब हो गए थे उन्हें दिल्ली में बहुत लोभ-लालच दिए गए लेकिन उन्होंने अपने गुरु का रास्ता नहीं छोड़ा, अपना शरीर आरे से चिरवा लिया। भाई मतिदास, सतिदास ने अपने गुरु के लिए कहा कि आप इसे बाहर से देखते हैं; यह जो कुछ हैं हम इसे अंदर देखते हैं।

प्यारेयो! हम जल्दबाजी करते हैं गुरुमत को भूल जाते हैं क्योंकि हम कमाई नहीं करते अंदर जाकर सच्चाई को नहीं देखते। जीव गुरु की दया से ही पास होता है। गुरु अपने कमाए हुए नाम में से कणी बख्शता है और लाखों-करोड़ो को पार कर देता है; वह इस काम के लिए ही संसार में आता है। गुरु चाहता है कि सेवक कमाई करें और मेरे जीवनकाल में ही पूर्ण हो जाएं। यह भी देखें! मैं इन्हें जीवन में क्या देने के लिए आया हूँ।

प्यारेयो! माता बच्चे के अंदर अपना प्यार भरती है। बच्चे को क्या पता है कि यह मेरी माता है इसने मेरी परवरिश की है? सबसे पहले माता ही बच्चे के अंदर आँखों के जरिए प्यार भरती है और उस बेजुबान को बोलना सिखाती है। जब बच्चा कोई टूटा-फूटा लफ्ज बोलता है तो माता की खुशी का कोई अंदाजा नहीं

लगा सकते। माता खुद भी खुश होती है और दूसरे लोगों को भी बताती है कि आज मेरे बच्चे ने इतना कुछ बोला है। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में लिखते हैं:

सुत अपराध करत है जेते, जननी चीत ने राखस तेते।

कई बार बच्चा माता को ईंट भी मार देता है बच्चा नहीं जानता कि इसे चोट लगेगी, कई बार खुद भी चोट खा लेता है। परमात्मा ने माता के अंदर बहुत सब्र रखा होता है वह कभी बुरा नहीं मनाती। प्यारेयो! इसी तरह गुरु शिष्य के अंदर प्यार पैदा करता है। वह हमारा सोया हुआ प्यार जगाता है। सेवक की क्या ताकत है कि वह उसे पहचान ले? महाराज जी मिसाल दिया करते थे, ''अंधे में यह ताकत नहीं कि वह सुजाखे को पहचान ले जब तक कि सुजाखा खुद ही अपनी अंगुली अंधे को न पकड़ाए।''

आप ठंडे दिल से सोचें! किसने आपको महाराज कृपाल के बारे में बताया? आपने समुंद्र की तह में, पहाड़ों की चोटियों में जाकर अपनी भूली आत्माओं को खोजा। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ आप नहीं गए, आपने सब आत्माएं इकट्ठी की। पलटू साहब ने भी कहा है:

उन्हें क्या है चाह सहत दुख घनेरा, जीव तारन कारणे फिरदे मुल्क बथेरा।

प्यारे बच्चो! बूढ़े शरीर से बिना किसी मुआवजे के निस्वार्थ यात्रा करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं होता। दुनिया में विरले ही निस्वार्थ सेवा करते हैं। गुरु हम सबको चाहता है लेकिन उसे कोई नहीं चाहता। कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु को चाहता है। गुरु सेवक से यही चाहता है कि यह भूला हुआ जीव भजन करके मेरे पास आए। जैसे बच्चा माता की बोलचाल सीख लेता है तो

माता को खुशी होती है इसी तरह जब सेवक भी भजन पर बैठते हैं तो गुरु की आत्मा को जो खुशी होती है उसे गुरु ही जानता है।

जिसके अंदर यह नूरी चरण, नूरी धूल, नूरी प्रकाश प्रकट हो जाता है उसका मन मजबूत हो जाता है फिर चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो जाए वह नहीं घबराता। ऐसी आत्मा के अंदर कमाल का सब्र, धीरज आ जाता है। वह जानता है कि ये सुख-दुख गुरु की तरफ से ही हैं। प्यारेयो! महाराज कृपाल कहा करते थे, ''वह बंदो के बीच से ही सुख-दुख देता है। प्रेमी को नजर आता है कि यह मेरा प्यारा ही आ गया है बेशक वह आपकी जान लेने ही क्यों न आए वह आपको प्यारा ही लगेगा।''

आप शर्मद का आखिरी समय पढ़कर देखें! जब जल्लाद शर्मद को कत्ल करने के लिए आया। फाँसी के समय सिर पर काला टोपा पहना देते हैं। शर्मद ने जल्लाद से कहा, ''इस टोपे की क्या जरूरत है? मैं तुझे जानता हूँ, मैं तुझे पहचानता हूँ।''

प्यारेयो! हम बात तो बहुत ऊँची नूर और प्रकाश की कर रहे हैं लेकिन मैं बताया करता हूँ जब हम अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं वहाँ लिंग-भेद और अपना-पराया खत्म हो जाता है। पारब्रह्म में पहुँचकर पता लगता है कि हम सब आत्मा हैं। वहाँ पहुँचकर ही यह भिन्न-भेद खत्म हो जाता है कि यह अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, हिन्दुस्तान का है। सच्चखंड पहुँचे हुए महात्मा का दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

बहुत से सेवकों ने गुरु अर्जुनदेव जी के पास आकर अर्ज की, ''हिन्दुस्तान में अढ़सठ तीर्थों की बहुत महिमा है, लोग माघ के महीनें में इन तीर्थों पर नहाते हैं क्या हमें भी कहीं स्नान करना चाहिए।'' गुरु साहब ने उन सेवको को प्यार से संबोधन कियाः

माघ मजन संग साधुआं धूणी कर स्नान।
जन्म कर्म मल उतरे मन ते जाए गुमान।।

माघ महीने का असली स्नान पूर्ण साधु के साथ मिलकर पारब्रह्म में जाना है। वहाँ स्नान करने से आपकी जन्म-जन्मांतरों की मैलें उतर जाएंगी। अहंकार आपका पीछा नहीं छोड़ता फिर यह भी किनारा कर जाएगा आपका पीछा छोड़ देगा। आपको पता है कि बुढ़ापे में आकर हर इन्द्री जवाब दे जाती है। आखिरी साँस निकलने तक अहंकार पीछा नहीं छोड़ता।

हमें कितने ही प्रकार का अहंकार लगा हुआ है अगर हमारे पास थोड़ा सा ज्यादा धन है तो हम अहंकार करते हैं हाँलाकि हमें पता है कि यह धन हमारे साथ नहीं जाएगा। अगर परमात्मा ने हमें थोड़ा बहुत रूप दिया है तो हम अंहकार करते हैं कि परमात्मा ने हमारे जैसा सुंदर कोई बनाया ही नहीं। अगर हमें मामूली सा बुखार चढ़ जाए तो मुँह पीला पड़ जाता है।

प्यारेयो! जिस चीज ने हमारे साथ ही नहीं जाना हम किस चीज का अहंकार करने में लगे हुए हैं? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं अगर आप उस पारब्रह्म के तालाब में जाकर नहाएंगे तो आपका इस अहंकार से भी पीछा छूट जाएगा और जन्म-मरण की मैल उतर जाएगी।

हर का नाम ध्याए सुण सबना नूं करदा।

आप 'शब्द-नाम' की कमाई करें और दूसरे लोगों को भी प्रेरणा दे कि नाम में शान्ति है। नाम के साथ जुड़ने से जन्म-मरण कट जाता है। नाम वह ताकत है जिसे चोर चुरा नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती। नाम जिंदगी का रोटी-पानी है। नाम ही इस संसार से हमारे साथ जाएगा।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अनमोल वचन

जो प्रेमी यहाँ भजन-सिमरन के कार्यक्रम में शामिल हुए हैं हम उनका स्वागत करते हैं। जो प्रेमी मेरे साथ यहाँ आए हैं उन्हें तो इस कार्यक्रम का पता है। हम सब जानते हैं कि हम यहाँ भजन-सिमरन के लिए इकट्ठे हुए हैं। प्रबंधकों ने यहाँ पर जो डिसीप्लेन बताया है हमने उस डिसीप्लेन के मुताबिक भजन-सिमरन में अपनी हाजरी लगानी है और ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करना है। हमें परमात्मा की दया से ऐसे कार्यक्रम का मौका मिलता है।

अच्छी सेहत का होना या ज्यादा धन-दौलत प्राप्त कर लेना कोई मुश्किल नहीं, ये उद्यम की चीज़े हैं। हम उद्यम करते हैं तो ये चीजें प्राप्त हो जाती हैं लेकिन परमात्मा की भक्ति, परमात्मा के साथ जुड़ना परमात्मा के हाथ में है। जिसका परमात्मा के साथ

मिलाप का वक्त आया होता है उसे परमात्मा अंदर से चाबी मरोड़कर किसी महात्मा के पास भेजता है। प्रेमी अपने दुनियावी कार्यक्रम छोड़कर जिस जगह महात्मा बैठा होता है वहाँ पहुँचते हैं। परमात्मा ने महात्मा के पास उनकी खुराक 'शब्द-नाम' रखी है।

हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतर से भूखी है, विलाप कर रही है। कोई आत्मा की आवाज को नहीं सुन रहा। सन्त-महात्मा हमें कहते हैं कि इस सोई हुई आत्मा की आवाज को भी सुनें। परमात्मा की दया है कि उसने हमें 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ने का खास मौका दिया है। हमारा फर्ज बनता है कि हम उस प्रभु शब्द का शुक्राना करें जो देह धारण करके संसार मंडल में आता है।

आज तक किसी ने भी उस ताकत सतगुरु शब्द का शुक्राना नहीं किया; केवल वही आदमी शुक्राना करते हैं जो उसके साथ जुड़ जाते हैं। हम गुरु को इंसान तब तक ही समझते हैं जब तक हमारा पर्दा नहीं खुलता। जिसका पर्दा खुल जाता है वह गुरु को कुलमालिक कहकर बयान करता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

आपन लिए जे मिले बिछड़ को रोवन।

अगर हमें तुझसे मिलने का अख्तियार होता तो हम तुझसे बिछड़कर क्यों रोते फिरते! हम नहीं जानते कि हम कितने युगों से इस दुखी संसार में चक्कर लगा रहे हैं।

हम आप सबका स्वागत करते हैं आप यहाँ भक्ति करने के लिए आए हैं। आप जिस मकसद के लिए अपना घर-बार छोड़कर यहाँ आए है, आपने अपना कीमती समय भजन-सिमरन में लगाना है; मन का कहना नहीं मानना।

हम बाबा सोमनाथ जी के प्रेमियों का धन्यवाद करते हैं जिनके अंदर बैठकर बाबा जी ने प्रेम जगाया, ये प्रेमी हर साल उद्यम करते

हैं बाबा जी की याद मनाते हैं। सन्त जन्म-मरण में नहीं होते। सन्त इस संसार में परोपकार के लिए आते हैं। सन्त जिन आत्माओं को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ जाते हैं सच्चखंड में बैठकर भी उन प्रेमियों का फिक्र करते हैं।

जब मेरा मिलाप बाबा सोमनाथ के साथ हुआ उस समय बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी को बताया कि मेरे इस चेले ने काफी धूनियां तपाई हैं और हिन्दुस्तान में जो भी हठकर्म हैं वह इसने किए हैं। उस वक्त महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ को बुलाया और उनकी प्रशंसा की कि मेरे इस सेवक ने भी परमात्मा को प्राप्त करने के लिए काफी कुछ किया है और कई किस्म के हठयोग किए हैं।

मैं आमतौर पर जोर देकर कहा करता हूँ कि साधु के माथे पर कोई बोर्ड नहीं लगा होता कि यह पूरा साधु है या पाखंडी है। हमने साधु की जिंदगी देखनी और पढ़नी है कि क्या इस साधु ने अपनी जिंदगी के दस-बीस साल या इससे भी ज्यादा समय मालिक की याद में बिताया है, मेहनत की है, रातों को जागा है।

हमें भी चाहिए कि हम मेहनत करें। मेहनत के बगैर दुनिया में कोई चीज़ प्राप्त नहीं होती। बेशक सन्त-महात्मा धुरधाम से बने बनाए आते हैं लेकिन यहाँ आकर उनके मेहनत करने का मकसद यह होता है कि वे दुनिया को डेमोस्ट्रेशन दे सकें। दुनियादार जान सकें कि इन्होंने इतनी मेहनत की है हम भी मेहनत करें।

सज्जनों! हमें मेहनत का चोर नहीं बनना चाहिए, मन के साथ संघर्ष करना चाहिए; संघर्ष करना ही अभ्यास है। आज आपको आपका मन यह सलाह देता है कि रात बड़ी है कल भजन कर लेंगे। कल भी उसी मन ने आपके पास होना है। ***

धन्य अजायब

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

7, 8, 9, 10 व 11 सितम्बर	2015
23, 24 व 25 अक्टूबर	2015
27, 28 व 29 नवम्बर	2015
25, 26 व 27 दिसम्बर	2015